राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक राष्ट्रीय-चेतना

संपादक
प्रो. शंकर बुंदेले

"राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना"

संपादक
प्रो. शंकर बुंदेले
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय,
अमरावती

"राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना"

संरक्षक
प्रो. कमल सिंह
कुलगुरु,
संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती

संपादक
प्रो. शंकर बुंदेले
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती
मो. ९४२२९१६३३९

प्रकाशक
प्रा. दिनेशकुमार जोशी
कुलसचिव,
संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती

मुद्रक
बोके प्रिंटर्स ॲण्ड स्कॅनर्स
गांधी नगर, अमरावती फोन नं. (०७२१) २५९०३००, २५९०३०१
मूल्य : 300/-

प्रो. कमल सिंह
कुलगुरु,

संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती

आशीर्वचन

'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी' संस्कृत की इस उक्ति से जन्मभूमि और जननी की गरिमा अवश्य ही प्रतिपादित होती है। अत: हमारी भारतीय संस्कृति आदिकाल से, माँ और मातृ - मही की गौरवशाली परंपरा को बनाये रखने हेतु विविध मूल्यों का जतन करती रही है। साहित्य तो अवश्य ही इन मूल्यों का संवाहक रहा है। विविध साहित्यकारों की सृजनशील रचनाओं में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय,सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों की सहजाभिव्यक्ति का मूल्यांकन तथा अनुशीलन करने हेतु गंभीर चिंतन - मनन कर, उन पर खुलकर विचार-विमर्श करना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है, तभी राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के लिए उभरती चुनौतियों का डटकर मुकाबला किया जा सकता है तथा शिक्षा के माध्यम से सक्षम नागरिक निर्मित किये जा सकते हैं । इसी अभीष्ट की सिद्धि हेतु संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती की 'रजत जयंती' महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के सहयोग से हिंदी विभाग, संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय ने "राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना" विषय पर 'राष्ट्रीय संगोष्ठी' का आयोजन दि. २४-२५ दिसंबर २००८ को किया था। इस संगोष्ठी में देश भर से हिंदी के

लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने अपनी सक्रिय भूमिका निर्वाहित की थी। मुझे विश्वास है कि वैचारिक-मंथन से निकले, अमृत रस का परिपाक, इस कृति "राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना" में अवश्य हुआ है।

साथ ही मुझे दृढ़ विश्वास है कि इन शोध-आलेखों के माध्यम से 'राष्ट्रीय संगोष्ठी' में निकाले गये निष्कर्षों को मूर्त रूप देने में सफलता मिली है जिससे प्राध्यापक, शोध-छात्र , छात्र तथा समीक्षक और हिंदी प्रेमी अवश्य ही लाभान्वित होंगे। इस प्रकार विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की यह विकास-यात्रा अनुसंधानात्मक गतिविधियों के माध्यम से समाज के लाभार्थ, प्रगतिपथ पर निरंतर अग्रसर होती रहेगी – ऐसी मैं कामना करती हूँ।

कमल सिंह

(प्रो. कमल सिंह)

प्रा. दिनेशकुमार जोशी
कुलसचिव,
संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती

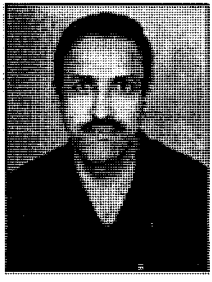

शुभकामना संदेश

प्रति,
प्रो.शंकर बुंदेले
'संपादक'

"राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक - राष्ट्रीय चेतना"

यह सर्वत्र विदित है कि जहाँ साहित्य समाज का दर्पण है, वहीं साहित्य में इतिहास एवं संस्कृति का समन्वय भी प्रतिबिंबित होता है। स्वाधीनता - आंदोलन को सफल रूप देने में जिन साहित्यकारों ने अपना सर्वस्व बलिदान किया था, उनमें राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का नाम अग्रगण्य रहा है। आप अवश्य ही राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत साहित्य का सृजन कर, नवीनतम सामाजिक - सांस्कृतिक मूल्यों की छाप भारतीय जनजीवन पर छोड़ गये हैं।

संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय की रजत जयंती के उपलक्ष्य में प्रायोजित राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी में देश के सूदूर अँचलों से आए विद्वानों के शोधालेखों का यह संकलन निश्चित रूप से भारतीय हिंदी साहित्य की परंपरा में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के स्थान को सुनिश्चित करने में एक सार्थक प्रयास सिद्ध होगा। साथ ही इस कृति के माध्यम से प्राध्यापक, शोधछात्र, छात्र एवं हिंदी प्रेमीगण अवश्य ही लाभान्वित होंगे — ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है।

आपका स्नेही
दिनेश जोशी
प्रा. दिनेशकुमार जोशी

संपादकीय

दिनांक : 30/3/2010

किसी भी भाषा का साहित्य समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होता है। वास्तव में समाज की अवधारणा अमूर्त होती है, सामाजिक संस्कृति साहित्य के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तातंरित होती हुई मूर्तगत होती है। इस प्रकार सांस्कृतिक मूल्यों के हस्तांतरण के साथ ही साथ जीवन मूल्य भी साहित्य में घुले -मिले रहते हैं। साहित्य मानवीय आस्वादन की प्रवृत्ति को ही तुष्ट नहीं करता बल्कि वह एक गंभीर चिंतन और गहन भावोद्रेक की मनःस्थिति को विनिर्मित करने में सहायक सिद्ध होता है। अतः साहित्य में हमारी सामाजिक - सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना रूपायित होती है। साहित्य में निहित इन चेतनाओं का अवगाहन एवं समकालीन सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय परिस्थितियों का समाकलन करने हेतु साहित्य सृजनकर्ता साहित्यकारों के विराट जीवन -फलक पर दृष्टिपात करना अत्यधिक जरूरी होता है ताकि उनके प्रगल्भ विचारों की मनोभूमि एवं विचारधाराओं पर गंभीर चिंतन -मनन किया जा सके। इसी के साथ बदलते परिप्रेक्ष्य में वैश्विकीकरण के संदर्भ में साहित्य में गूँथे विविध सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सही दृष्टि अपनाकर, उनका जतन किया जाना अत्यंत समीचीन प्रतीत होता है। इसी संदर्भ में साहित्यकार राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की जन्मशताब्दी एवं संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 'राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी ' विषय - ''राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना'' का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया था । द्वि - दिवसीय इस राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी में देशभर से हिंदी विषय के निष्णात विद्वानों ने सक्रिय सहभागिता निभायी थी। उन सभी के चिंतन से निकले हुए सूत्रसार - पुष्पों को इस कृति के माध्यम से अध्ययन एवं मननार्थ यहाँ क्रमशः पिरोया गया है।

हमें इस कृति के प्रकाशनार्थ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने जो आर्थिक सहयोग प्रदान किया है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं। इसके प्रकाशन में मूलतः प्रेरक एवं मार्गदर्शक मा. कुलगुरु प्रो. डॉ.कमल सिंह, संत

गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ के प्रति हम चिरऋणी रहेंगे, जिनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। साथ ही प्रो.जयंत देशपांडे, प्र - कुलगुरु के प्रति साधुवाद देना हम नितांत आवश्यक मानते हैं, जिनका चिरस्मरणीय सहयोग हमें मिलता रहा है। इस कृति के आकार ग्रहण करने में जिनका सदैव सकारात्मक संबल मिलता रहा हैं, वे हैं संचालक, प्रा. शरद तनखीवाले, बी.सी.यु.डी. जिनके प्रति आभार व्यक्त करना हम अपना पुनीत कर्तव्य मानते हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रमुख प्रा.दिनेशकुमार जोशी, कुलसचिव, संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ का निरंतर सहयोग भी हमें प्राप्त होता रहा है जिनके प्रति साधुवाद व्यक्त करना हमारा परम कर्तव्य है। अंत में, मैं उन सभी विद्वान लेखकों का आभार मानता हूँ जिनके शोधालेख इस कृति में समाविष्ट हुए हैं। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिंतन सही परिप्रेक्ष्य में इस कृति के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में सार्थक सिद्ध हो सकेगा। हम विषाक्त, प्रदूषित एवं विकृत सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के नष्ट - भ्रष्ट होने के प्रति सदैव आश्वस्त रहे हैं, जिसकी सहज अभिव्यक्ति हमारी निम्नांकित काव्यपंक्तियों से की जा सकती है -

विषमता का तमस छट जायेगा,
समता -सूर्य के उदित होने से ।
बाग़ में होगा नहीं अब कोई खार,
मन - मुकुल के प्रमोदित होने से ।।

अतः यही राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य पर हुए,द्वि - दिवसीय संगोष्ठी में चिंतनरूपी समुद्र - मंथन से निकला हुआ – अमृतसार है, जिसे हम इस 'कृति' के रूप में साभार प्रस्तुत करते हैं। स्वीकारें!

धन्यवाद सहित।

प्रो. शंकर बुंदेले

"राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना"

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना	प्रो. शंकर बुंदेले	१-८
२.	दिनकर की प्रेमानुभूति	प्रो. नरेश मिश्र	९-२८
३.	दिनकर के काव्य-दृष्टि का विकासात्मक मूल्यांकन	प्रो. अर्जुन चव्हाण	२९-४६
४.	दिनकर की कविता का समाज - दर्शन	प्रो. वीरेंद्र मोहन	४७-५४
५.	दिनकर : राष्ट्रीयता और सामाजिकता की प्रासंगिकता	प्रो. आर .एस . सर्राजु	५५-६२
६.	दिनकर के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. विनयकुमार पाठक	६३-६८
७.	दिनकर के काव्य में क्रांति का उद्घोष	डॉ. विजयकुमार वेदालंकार	६९-८३
८.	दिनकर के काव्य में सामाजिक चेतना	डॉ. आलोक गुप्त	८४-८८
९.	दिनकर की श्रृंगार भावना	डॉ. दयानंद शर्मा 'मधुर'	८९-९४
१०.	आधुनिक हिंदी के प्रतिनिधि कवि : दिनकर	श्री उदयन शर्मा	९५-१०२
११.	'कुरुक्षेत्र' में अभिव्यक्त सामाजिक दर्शन : दिनकर	डॉ. उषा साजापुरकर	१०३-११५
१२.	वन्हि के बेचैन रसकोष का कवि और 'हारे को हरि नाम'	डॉ. रंजीत कौर	११६-१२७

अ.क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
१३.	राष्ट्रचेतना के शाश्वत सूर्य कवि दिनकर	डॉ. सुरेशकुमार केसवानी	१२८-१३३
१४.	परशुराम की प्रतीक्षा : सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना	श्री गोकुल क्षीरसागर	१३४-१३८
१५.	राष्ट्रकवि दिनकर जी के काव्य में सामाजिक -राष्ट्रीय चेतना	डॉ. शिबानी शाह	१३९-१६४
१६.	'रश्मिरथी ' में अभिव्यक्त सामाजिक चिंतन	डॉ. हसमुख बारोट	१६५-१६७
१७.	दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में मानवतावादी दृष्टिकोण	डॉ. त्रिवेणी सोनोने	१६८-१७२
१८.	राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना	श्रीमती रेखा दुबे	१७३-१७७
१९.	राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं में अभिव्यक्त सामाजिक और राष्ट्रीय भावना	श्रीमती सुनीता वाजपेयी	१७८-१८०
२०.	दिनकर के साहित्य में सामाजिक संघर्ष	श्री ज्ञानेश्वर गाडे	१८१-१८४
२१.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक - राष्ट्रीय चेतना	डॉ. रमा शुक्ला	१८५-१८८
२२.	राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक -राष्ट्रीय चेतना	कु. रत्नमाला धुळे	१८९-१९३
२३.	दिनकर के 'रश्मिरथी ' में अभिव्यक्त सामाजिक चिंतन	डॉ. वाय. सी. मेंढे	१९४-१९७

अ.क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
२४.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दिनकर जी के काव्य की प्रासंगिकता	डॉ. ज्योति मंत्री	१९८-२०२
२५.	राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'के साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना	डॉ. शालिनी वाटाणे	२०३-२०६
२६.	दिनकर के काव्य में मानवतावादी चेतना (कुरुक्षेत्र एवं रश्मिरथी के विशेष संदर्भ में)	डॉ. श्यामप्रकाश पांडे	२०७-२१३
२७.	राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक नजर	डॉ. आशा पाण्डेय	२१४-२१८
२८.	दिनकर के 'कुरूक्षेत्र' में मानवतावादी दृष्टिकोण	श्री मनोज जोशी	२१९-२२१
२९.	दिनकर के राष्ट्रीय काव्य की प्रासंगिकता	डॉ. संजय धोटे	२२२-२२६
३०.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में अभिव्यक्त मिथकीय संचेतना	कु. कमलिनी पशीने	२२७-२३१
३१.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त वीर रस	श्री चंदन विश्वकर्मा	२३२-२३४
३२.	दिनकर के काव्य में अभिव्यक्त मानवतावादी चिंतन	कु. प्रतिभा इंगोले	२३५-२४२
३३.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना	कु. नलिनी पशीने	२४३-२४९
३४.	राष्ट्रीय चेतना के कवि दिनकर	कु. अर्चना मोहोड	२५०-२५५

रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना

प्रो. शंकर बुंदेले

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं होता बल्कि समाज कैसा होना चाहिए? इस आदर्शमय परिकल्पना की प्रस्तुति भी करता है। इतिहास हमारे विगत का सूक्ष्म निरीक्षण कर, वर्तमान का सही उपयोग करने और भविष्य को अधिकाधिक सुंदर,सुरम्य तथा आशामय बनाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण होता है। यह सत्य है कि इतिहास और साहित्य का संबंध अन्योन्याश्रित होता है। साहित्य इतिहास और इतिहास साहित्य में इस तरह दोनों एक दूसरे में प्रतिबिंबित होते हुए दिखाई देते हैं। इन सबका लक्ष्य मानव-मन के आंतरिक विकास को रेखांकित करना ही नहीं बल्कि उसे विकसित होने के नवीनतम आयामों की प्रस्तुति करना भी होता है ताकि मानव, मानव ही रहकर मानव-समाज के उत्थान में अहम भूमिका निर्वहित कर सके। इस दृष्टि से इतिहासवेत्ता एवं साहित्यकार के रूप में हिंदी साहित्य को 'संस्कृति के चार अध्याय' जैसे अमूल्य ग्रंथ को देने का महती कार्य राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने किया है। आपने दो वर्षों के गहन अध्ययन, चिंतन एवं मनन के उपरांत भारतीय संस्कृति के चार चरण निरूपित किये हैं,जिनसे हमारी सांस्कृतिक चेतना की अवधारणा, उसका स्वरूप एवं व्याप्ति समझी जा सकती है। आपने कहा है - " भारतीय संस्कृति में चार बड़ी क्रांतियाँ हुई हैं और हमारी संस्कृति का इतिहास उन्हीं चार क्रांतियों का इतिहास है। पहली क्रांति तब हुई, जब आर्य भारतवर्ष में आये अथवा जब भारतवर्ष में उनका आर्येतर जातियों से सम्पर्क हुआ।..... दूसरी क्रांति तब हुई,जब महावीर और गौतमबुद्ध ने इस स्थापित धर्म या संस्कृति के विरुद्ध विद्रोह किया तथा उपनिषदों की चिन्तनधारा को खींचकर,अपनी मनोवांछित दिशा की ओर ले गये। ..... तीसरी क्रांति उस समय हुई,जब इस्लाम,विजेताओं के धर्म के रूप में भारत पहुँचा और इस देश में हिन्दुत्व के साथ उसका सम्पर्क हुआ। और चौथी क्रांति हमारे अपने समय में हुई,जब भारत में यूरोप का आगमन हुआ, तथा उसके सम्पर्क में आकर हिन्दुत्व एवं इस्लाम दोनों ने नव-जीवन का अनुभव किया।"[1]